Dainik Bhaskar (Indore), 07th August 2023, Front Page – plus 04

भास्कर खास • आईआईटी खड़गपुर के पासआउट ने बनाया था आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित सॉफ्टवेयर

कैंसर, निमोनिया, अल्जाइमर जैसी बीमारियों से ग्रामीणों को बचाएगा आईआईटी इंदौर का इन्क्यूबेशन सेंटर, समय से पहले सचेत भी करेगा

सौदामिनी मुजुमदार | इंदौर

आईआईटी इंदौर का इन्क्यूबेशन सेंटर कैंसर, निमोनिया, अल्जाइमर जैसी घातक बीमारियों से देशभर के लोगों को बचाने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास कर रहा है। दरअसल, आईआईटी खड़गपुर से पासआउट संदीप सिन्हा ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित एक ऐसे सॉफ्टवेयर का निर्माण किया है, जिसकी मदद से कई जानलेवा बीमारियों के बारे में 5 साल पहले ही पता लगा सकेंगे। अब आईआईटी इंदौर की संस्था उनके स्टार्टअप के काम को नई दिशा प्रदान कर रही है।

संदीप ने बताया उन्होंने एआई के साथ यह सफर 2019 में शुरू किया था। वे 7 देशों में इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सेवा दे रहे हैं। भारत सरकार के साथ टीबी, निमोनिया, कैंसर, किडनी फैलियर आदि का पता लगाने और उपचार में मदद कर रहे हैं। छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, ओडिशा, तमिलनाडु में भी काम कर रहे हैं।

47 लोगों में पैंक्रियाज कैंसर की आशंका जताई थी जो सही निकली

सिन्हा बताते हैं, नवंबर 2021 में बस्तर के 10 गांवों में 8 हजार लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। एक्स-रे, ब्लड टेस्ट और सोनोग्राफी की मदद से 47 लोगों में पैंक्रियाज कैंसर की आशंका जताई थी। जनवरी 2023 में टीम दोबारा उन्हीं गांवों में पहुंची तो सभी 47 लोग कैंसर पीड़ित पाए गए। उन्होंने कहा- यूनाइटेड नेशन ने उनके इस सॉफ्टवेयर की मदद से अफ्रीकी देशों में येलो फीवर और मीजल्स जैसी बीमारियों का पता लगाने का जिम्मा उन्हें दिया गया है।

हजारों में होने वाली जांच कम खर्च में

सिन्हा ने बताया, ब्रेस्ट कैंसर का पता लगाने के लिए 4 जांचें करवाना पड़ती हैं। इसमें 15 हजार खर्च होते हैं और 6 दिन लगते हैं। वहीं उनके सॉफ्टवेयर की मदद से सिर्फ एक जांच कर 53 सेकंड में बीमारी का पता लगाया जा सकता है। अल्जाइमर की जांच एमआरआई, हावभाव और आवाज की जांच से होती है। इसमें 53 सेकंड लगते हैं। उन्होंने बताया, वे जल्द रीढ़ की हड्डी से संबंधित मरीज की निगरानी के लिए चिप भी बनाने जा रहे हैं।

फंडिंग से लेकर डिवाइस बनाने तक में मदद

दृष्टि फाउंडेशन के सीईओ आदित्य एसजी व्यास ने बताया, आईआईटी इंदौर, अब तक 134 अस्पताल, जांच केंद्र, बीमा कंपनियों से संपर्क कर चुका है, जिनकी मदद से गरीब तबके तक ये सेवाएं पहुंचाई जा सके। हम कंपनी की फंड प्राप्त करने से लेकर सॉफ्टवेयर के इंटरफेस और डिवाइस को डेवलप करने और उसे अधिक सुचारु बनाने में भी मदद कर रही।